प्रसाद जी के नाट्य–सृजन के गीतों का वैशिष्ट्य

डा० कल्पना माहेश्वरी
असिस्टैन्ट प्रोफेसर–हिन्दी
ए०के०पी० (पी०जी०) कॉलिज, खुरजा

प्रसाद जी का भावुक कवि मन नाटकों में मौन नहीं रह सका है, नाटकों में प्रस्तुत गीतों के माध्यम से वह मुखर रहा है, उनके ह्दय को कोमल अनुभूतियां इन गीतों में गुंथकर सहजता से अभिव्यक्त हुयी है, सम्भवतः यही कारण है कि नाटको के अधिकांशतः गीत नारी–पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत हुए है और वह भावुकता की अनुपम निधि हैं 'रूपक' रचना के बीच में जहां कहां भी अवसर मिला वहां अपनी भावुकता से प्रेरित कविताओं के प्रदेश का यह सरल द्वार उनके लिये खुल पड़ा।''[1] यह गीत कथानक से विलग मात्र भावना का संदेश ही नहीं देते अपितु कथानक के साथ उनकी सार्थकता भी सिद्ध है। इन गीतों की रचना विशेष मनोभावों की सहज प्रकाशन अभिव्यकित के लिये ही हुयी है। अन्तर की गहनतर तरल अनुभूति का गद्य में पूर्णतः मुखर होना संभव नहीं है और न ही नाटक के रंगमंच पर लम्बे लम्बे स्वगत कथन शोभा देते है। अतः यह गीत पात्रों के चरित्रों को उभारने में तो सहायक है ही साथ ही अपने संगीत तत्व के कारण दर्शकों का पर्याप्त मनोरंजन कर अपनी उपादेयता स्पष्ट कर देते है।

प्रसाद जी प्रथम नाट्य कृति 'सज्जन' 1910 ई. तथा अन्तिम नाट्य कृति 'ध्रुवस्वामिनी' 1933 ई. में प्रकाशित हुयी। लगभग 100 से अधिक गीतों की सर्जना इस 23 वर्ष के विस्तृत अंतराल में लिखी गयी नाट्य कृतियों में प्रकाशित है। इन गीतों में क्रमशः कवि का व्यकितत्व विकास देखा जा सकता है। 1910 ई. से 1914 तक उन्मेश काल 1921 ई0 से 1924 तक विकास काल 1925 ई. से 1933 ई. तक प्रौढ़ काल।

1910 ई. से लेकर विकास कालीन नाटकों के गीतों की रचना तक प्रसाद जी पारसी रंगमंचीय पद्धति से प्रभावित रहे। उनकी 'सज्जन' से लेकर 'कामना' 1924 ई. तक की कृतियों में यह प्रभाव परिलक्षित होता है। परन्तु प्रौढ़ कालीन नाटकों के गीतों तक आकर वह इस प्रभाव से पूर्णतः मुक्त हो गये। अपनी विकसित काव्य प्रतिभा के साथ विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी काव्य धरातल पर उतरकर वह गीति नाट्य को गीतों की अद्भुत मणियां दे गये।

हिन्दी नाटक आरम्भ में संस्कृत नाट्य परम्परा से प्रभावित होकर पद्य में लिखे जाते थे और गीतों को उनमें स्थान दिया जाता था। प्रसाद जी ने भारतेन्दु को परम्परा को बढ़ाते हुये नाटक को साहित्यिक आधार दिया, यद्पि प्रारंभिक कृतियों में वह परम्पराओं का पूर्णतः निशेध नहीं कर पाये। आरम्भिक कृतियां 'सज्जन' 'कल्याणी परिणय' 'प्रायश्चित' आदि में संभाषण के लिये पद्य का प्रयोग किया गया है, गीतों की संख्या भी सीमित है। 'सज्जन' में नर्तकियों द्वारा प्रस्तुत गीत सदा जुग जुग जियों महाराज सुखी रहो सब भांति आनन्दित,

भोगों सब सुख साज यद्यपि साधारणीकरण में सहायक है किन्तु बीच बीच में प्रस्तुत पद्य खंड बहुत अस्वाभाविक प्रतीत होते है। आगे चलकर इनका परित्याग कर दिया गया और गीत नाटक का ही अंश बनकर प्रस्तुत हुए।

विकास के क्रमानुसार आरम्भिक प्रयासों के पश्चात् 'राज्य श्री' जनवरी 1915 ई. के सात गीतों में धनीभूत वेदना का कारूणिक प्रकाशन है। नाटक के अन्त में सभी पात्र करूणा कादम्बिनी की वर्षा के लिये सामूहिक प्रार्थना गान करते हैं।

विशाखा (1921)

नाटक के माध्यम से अतीत की अभिव्यकित करता है। वन्दिनी चन्द्रलेखा प्रस्तुत मूल गीत गाती है–

''देखी नयनों में एक झलक, वह छवि की छटा निराली थी।
मधु पीकर मधुप रहे सोये कमलों में कुछ कुछ लाली थी।''[2]

पारिव्राजक का भाव पूर्ण गीत, नर्तकी का राज सभा में प्रस्तुत मादक गीत। वस्तुतः प्रणय, उपदेश, प्रार्थना सभी की अभिव्यक्ति का माध्यम गीत ही बना हैं।

अजातशत्रु (1922)

'अजातशत्रु' में भी गीतों की संख्या अधिक है। आरम्भ में ही जगत की नश्वरता को संकेतित करता भिक्षुओं का गान है, मागन्धी का प्रणय गीत और पदमावती का संगीत के सप्त 'स्वरों से गुंजित यह गीत –

'भीड़ मत खिंचे बीन के तार
निर्दय उंगुली अरी ठहर जा
पल भर अनुकम्पा से भरजा
यह मूर्च्छना आह सी
निकलेगी निस्सार।'[3]

श्यामा का नृत्य गान के साथ प्रणय प्रदर्शन, मांगधी की निराशा का गीत, विरूद्धक का गीत आदि कुल मिलाकर लगभग 15 गीतों में पात्रों के व्यक्तित्व की छाया है। आत्मभिव्यंजना का समावेश है। भाव और शिल्प दोनों ही दृष्टि से ये गीत कवि की प्रगति के परिचायक है।

कामना (1924 ई.)

'कामना' मानवीय मनोविकारों का मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया एक सुन्दर रूपक है, इसमें प्रस्तुत आठ गीत कथानक को सजीवता प्रदान करते है। गीतों की भाव धारा पात्रों की मनःस्थिति के पूर्णतः अनुरूप है।

जन्मेजय का नागयज्ञ (1926 ई0)

'जन्मेजय का नाम यज्ञ' के गीतों ने चरित्रांकन में सहयेाग के साथ ही कथानक आगे बढ़ाने में भी परोक्ष रूप से सहायता दी है। प्रथम अंक में दामिनी आज्ञा से गाती है। सरमा भी गाती हुयी प्रवेश करती है।

'लोट न आया, निर्दय ऐसा, रूठ रहा कुछ बातों पर,
था परिहास एक दो क्षण का, वह रोने का विषय हुआ।'[4]

मनसा और उसकी सखियां राष्ट्रीय गीत गाती है, आर्य सैनिक स्वाभिमान से प्रेरित सामूहिक गीत गाते है। अंत में दार्शनिक तथ्यों का निरूपण करता एक दार्शनिक गीत के साथ गीतों की श्रंखला में पर्याप्त विकास दृष्टिगोचर होता है।

'स्कन्दगुप्त (1928)'

स्कन्दगुप्त में आरम्भ में ही नर्तकियां गाते हुये प्रवेश करती है परन्तु इनमें कोई मानसिक अभिव्यक्ति नहीं है। अपने भावुक कवि का आत्म प्रकाशन प्रसाद जी ने मातृगुप्त के द्वारा ही कर दिया है। देवसेना का गीत संगीत प्राण सहचर है वह हर स्थिति में गाना चाहती है युद्ध भी उसके लिये गान है, वह गाती है–

'भरा नैनों में मन में रूप
किसी छलिया का अमल अनूप'[5]

यहां प्रसाद जी की रहस्यवादी प्रवृत्ति मुखर हो उठी है, वह छलिया जल, स्थल, नभ सभी में व्याप्त है। विजया भी अपनी विलास कल्पना के गीत गाती है पर उनमें स्वाभाविकता नहीं है वस्तुतः स्कन्दगुप्त में देवसेना ही गीतों का भार वहन करती है, उसके गीत हृदय की संचित वेदना है। कवि प्रसाद की वेदन इन गीतों में व्यक्त हो उठी है। इसी नाटक में भारत के अतीत वैभव का वह प्रसिद्ध गीत भी संग्रहीत है आर्य–गौरव से अनुप्राणित मातृगुप्त गाता है–

'जिये तो सदा इसी के लिये, यही अभिमान रहे, वह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष'[6]

गीतों का प्रभाव इतना बढ़ता है कि स्कन्दगुप्त भी 'बजा दो वेणु मनमोहन'[7] गीत गा उठता है। प्रसाद की गीति सृष्टि का श्रेष्ठ रूप सौरभ इस नाटक में महक उठा है।

एक घूँट (1930)

'एक घूँट' के आरम्भ में प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य प्रेमलता एक गीत गाती है जिसमें जीवन के प्रति स्वस्थ व सरस दृष्टिकोण है। आगे वह दुख का एक गीत गाती है–

'घुमड़ रही है जीवन घाटी पर जलधर की माला
क्षणिक सुखों पर सतत् झूमती शोकमयी ज्वाला।'[8]

मात्र तीन गीत 'एक घूंट' में अंकित है यह गीत एक भावना का प्रतिपादन करते है। परिस्थितियों और विषय के अनुकूल ही इनकी रचना हुयी है। इनमें पात्रों की व्यक्तिगत अनुभूति की अपेक्षा नाटककार के विचारों का प्रतिपादन उचित मात्रा में सफल हुआ है।

'चन्द्रगुप्त' (1931)

'चन्द्रगुप्त' के गीतों का प्रयोग कथानक के विकास और समयानुकूलता के कारण हुआ है। लगभग 10 गीत इस नाटक में मिलते है। आरंभ में सुवासिनी भाव सहित सौन्दर्य का सूक्ष्म चित्र गान द्वारा प्रस्तुत करती है।

'तुम! कनक किरन के अंतराल में
लुक छिपकर चलते हो क्यों?
नत मस्तक गर्व वहन करते
जीवन के घन, रस वन ढरते
हे लाज भरे सौन्दर्य बता दो
मौन भरे रहते हो क्यों।'[9]

अपने सूक्ष्म रूप में गीत का चित्र पूर्णतया स्पष्ट है इसी के पश्चात राक्षस मूक अभिनय सहित गाता है–

'निकल मत बाहर दुर्बल आह।'[10]

द्वितीय अंक में कार्नेलिया सिन्धु तट की रमणीयता का गीत गाती है। 'अरूण यह मधुमय देश हमारा।'[11] अलका एक ओर राष्ट्र सेविका है वह देश की स्वतन्त्रता के लिये पर्वतेश्वर की प्रणयिनी बनने का नाटक कर यौवन और प्रणय की मादकता से पूर्ण गीत गाती है।

'प्रियतम के आगमन पंथ में उड़न रही है कोमल धूल
कादंबिनी उठी यह ढंकने वाली दूर जलधि के फूल
समय विहग के कृष्ण पक्ष में रजत चित्र सी अंकित कौन
तुम हो सुंदरि तरल तारिके। बोलो कुछ बैठो मत मौन।'[12]

नंद के आग्रह पर सुवासिनी मादकता से गाती है –

'आज इस यौवन के माधवी कुंज में कोकिल बोल रहा'[13] सखे वह प्रेममयी रजनी।'[14] गीत सुवासिनी कार्नेलिया के शिविर में प्रस्तुत करती है। 'सुधा सीकर ने नहला दो।'[15] कलयाणी द्वारा प्रस्तुत विनय भावना प्रधान गीत है। मालविका द्वारा तीन प्रेम गीत प्रस्तुत किये है। बज रही वंशी आओ श्याम प्रेम की प्रगाढ़ता और सर्वातिशयता का चित्र है। मधुप कब एक कली का है।[16] गीत में उपालम्ब की भावना है। 'ओ मेरे जीवन की स्मृति' में'[17] चन्द्रगुप्त की शैया पर उत्सर्ग हेतु मालविका की आत्म चिन्तन और प्रबोधन है – वह गाती है

'कहां ले चले कोलाहल से मुखरित तटको छोड़ सुदूर
आह तुम्हारे निर्दय डांड़ो से होती है सहरे चूर
देख नहीं सकते तुम दोनों थकित निराशा से मीमा
बहको मत क्या न है बता दो क्षितिज तुम्हारी नव सीमा।'[18]

सैनिकों में वीरत्व और उत्साह का संचार करता अलका का गीत सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रीय गीत है।

'हिमाद्रि तुंग श्रंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयम् प्रभा समुज्जवला
स्वतन्त्रता पुकारती

अर्मत्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो, बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति रश्मिया
विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृ भूमि के
रूको न शूर साहसी।
अराति सैन्य सिन्धु में सुवाडवाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो, बढ़े चलो''[19]

इस प्रकार ''चन्द्रगुप्त के गीत विभिन्न भावनाओं को समेटें है। इनमें संगीतात्मकता, सरसता, प्रवाहात्मकता सभी कुछ विकास की प्रौढ़ता लक्षित करता है।

ध्रुव स्वामिनी (1933 ई0)

'ध्रुवस्वामिनी' में पश्चिमी और भारतीय शैली का समन्वय हुआ है, एक दृश्य में सम्पूर्ण कथानक बंधा है। इसमें कुल चार गीत है – 'दुखिया वसुधा पर करूणा बनकर बिखरा' दूसरा गीत भी मंदाकिनी द्वारा प्रस्तुत एक राष्ट्रीय रचना है। अपने सबल स्वर द्वारा वह नव युवकों को देश की रक्षा के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

'पृथ्वी की आंखों में बनकर, छाया पका पुतला बढ़ता हो
सूने तम में हो ज्योंति बना, अपनी प्रतिमा को गढ़ता हो
पीड़ा की धूल उड़ाता सा, बाधाओं को ठुकराता सा
कष्टों पर कुछ मुख्याता सा, ऊपर ऊँचे सब मेल चले।'[20]

आस्था और विश्वास से पुरित यह गीत कवि के प्रगतिशील विचारों का परिचायक है और उसके जीवन–दर्शन को उच्चरित कर रहा है। शेष दो गीत प्रेम प्रधान हैं, कोमा द्वारा प्रस्तुत ''यौवन तेरी चंचल छाया में'' उसकी अल्हड़ता और यौवन के प्रति जिज्ञासा की भावनायें व्यक्त हुयी है। अन्तिम गीत–शकराज के दरबार में नर्तकियों द्वारा प्रस्तुत प्रकृति का मानवीकरण कर सौन्दर्य का मादक चित्र है, इसमें मात्र रहस्यवादी प्रवृत्ति है पर पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सकी है।

विकास की दृष्टि से ये गीत एक लम्बे समय में लिखे गये, इनमें क्रमशः परिष्कार हुआ है इनमें से कुछ गीतों की रचना पहले स्वतन्त्र रूप से हुयी फिर वह नाटक में संग्रहीत कर लिए गये। आरम्भिक नाटकों में गीतों की अधिकता थी परन्तु धीरे–धीरे प्रसाद जी स्वाभाविक गति पर आ गये। नाटकों के इन गीतों में विविधता है, कहीं उनमें प्रणय के अल्पवास है, कहीं आतंरिक झंझावात है, कहीं वेदना है, कहीं प्रकृति–सौन्दर्य है, कहीं राष्ट्र प्रेम है और कहीं जीवन दर्शन। इन गीतों में व्यक्तिगत अनुभूतियां भी दर्शन की ओर बढ़ती दिखायी देती है, प्रसाद जी की दार्शनिक विचारधारा इन गीतों में प्रतिफलित हुयी है। 'अजातशत्रु' की दार्शनिक पृष्ठ भूमि में बौद्ध विचारधारायें है, 'स्कन्दगुप्त' में कवि का कल्पना लोक कोई लक्ष्य पाना चाहता है– वह

अपने प्रयोगों के आधार पर आदर्श और सिद्धान्तों की सीापना कर लेता है, इन गीतों में शाश्वत मानवीय भावनायें समाविष्ट है। 'एक घूँट' में जीवन के चिरन्तन मूल्य पर विस्तार से विचार किया है। 'चन्द्रगुप्त' की ऐतिहासिक रूप रेखा में पात्रों की व्यक्तिगत भावनायें गीत बनकर मुखर हुयी है। 'चन्द्रगुप्त' के गीतों में विविधता है, कहीं करूणा है, कहीं यौवन का मद है, कहीं राष्ट्रीय भावना है। 'ध्रुवस्वामिनी' तक आते कवि का प्रेम और जीवन के प्रति दृष्टि पूर्णतः विकसित हो गये है। वस्तुतः यह नाट्य गीत प्रसाद जी की आगामी प्रौढ़ काव्य–कृतियों की सुदृढ़ भूमिकायें है। डा0 प्रेमशंकर लिखते है– इन नाट्य गीतों में कवि को अपने भावी निर्माण के आरम्भिक प्रयोंगों का अवसर मिला। 'कामायनी' में जिन मानवीय भावनाओं, चित्रमय रूपकों, मनोवैज्ञानिक विश्लेष आदि का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत हुआ, उसके बीच इन गीतों में निहित है। कवि मानवीय मूल्यों को गहराई से पकड़ लेता है। जीवन के आधारभूत सत्य यवह पा जाता है। सुख–दुख का समन्वित रूप काव्य–दर्शन के साथ ही जीवन– सत्य के रूप में प्रस्तुत होता है। प्रत्येक महान कलाकार साहित्य के संकेतों से जीवन का श्रंगार करता है। प्रसाद का यह रूप महाकाव्य में अधिक मुखर हो सका है, किन्तु उसका संक्षिप्त स्वरूप गीतों में मिल जाता है। बौद्ध दर्शन से प्रभावित 'लहर' के गीतों में केवल एक विशेष दर्शन का आग्रह है। नाट्यगीतों में गौतम के भी उपदेश ''अजातशत्रु' में है किन्तु इसके अतिरिक्त जीवन की अन्य बहुमुखी अनुभूतियों का निर्देश कवि ने अपने नाट्यगीतों में किया। नाटक के गीत, भावना की विविधता, भाव की स्पष्टता और भाषा की सरल किन्तु मनोरम भंगिमा में झरना और लहर के गीतों से कुछ कम आकर्षक और प्रभावशाली नहीं है।'[21]

संदर्भ

प्रसाद जी के नाटकों के गीतों का वैशिष्टय

1. शर्मा, डा. जगन्ननाथ प्रसाद. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन. पृष्ठ **244.**
2. प्रसाद, जयशंकर. विशाख (नाटक). पृष्ठ **29.**
3. प्रसाद, जयशंकर. अजात शत्रु. पृष्ठ **58.**
4. प्रसाद, जयशंकर. जन्मेजय का नाग यज्ञ. पृष्ठ **62.**
5. प्रसाद, जयशंकर. स्कन्दगुप्त. पृष्ठ **45.**
6. प्रसाद, जयशंकर. स्कन्दगुप्त. पृष्ठ **63.**
7. प्रसाद, जयशंकर. स्कन्दगुप्त. पृष्ठ **110.**
8. प्रसाद, जयशंकर. एक घूंट. पृष्ठ **24.**
9. प्रसाद, जयशंकर. चन्द्रगुप्त. पृष्ठ **54.**
10. प्रसाद, जयशंकर. चन्द्रगुप्त. पृष्ठ **55.**
11. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **85.**
12. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **109.**
13. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **130.**

14. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **176.**
15. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **148.**
16. प्रसाद, जयशंकर. चन्द्रगुप्त. पृष्ठ **156.**
17. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **155.**
18. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **157.**
19. प्रसाद, जयशंकर. वही. पृष्ठ **164.**
20. प्रसाद, जयशंकर. ध्रुव स्वामिनी. पृष्ठ **39.**
21. शंकर, डा. प्रेम. प्रसाद का काव्य. पृष्ठ **233.**